Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.69
ISSN No. 2456-1665

सुधा अरोडा की कहानियों में चित्रित स्त्री जीवन

डॉ. बिक्कड ए. एस.
हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं सहयोगी प्राध्यापक,
राष्ट्रमाता इंदिरा गांधी कला, वाणिज्य
एवं विज्ञान महाविद्यालय, जालना

सुधा अरोड़ा की कहानियों में स्त्री जीवन एक महत्त्वपूर्ण विषय है। जिसमें उन्होंने सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक परिस्थितियों के संघर्षों को स्पष्ट किया है। उनकी कहानियों में स्त्री विमर्श, नारी अस्मिता, नारी जीवन, सशक्तिकरण के कई स्पष्ट किया है। समाज में पुरुष वर्ग की मानसिकता का उन्होंने कहा कि वह नारी को हमेशा अपने ही शिकंजे में रखना चाहता है। पुरुष वर्ग को यह डर है कि स्त्री स्वतंत्र हो गयी तो उसकी हार हो जायेगी। कहा जाता है कि स्त्री और पुरुष वर्ग एक है परंतु प्रभाव पुरुष का रहता है। परंतु नारी ने आज हर क्षेत्र में अपना दबदबा बना रखा है। आज नारी ने अपने को हर क्षेत्र में स्थापित करने का कार्य किया है। यह सब स्त्री शिक्षित होने से हुआ है। आधुनिक युग के समाज को बदलने के पिछे उसकी भूमिका हमेशा प्रभावी रही है। समाज बदलने में पुरुष भी साथ रहना चाहिए तो निश्चित बदलाव आयेगा। इस संदर्भ में सुधा अरोड़ाने कहा है - "स्त्री सशक्तिकरण धीरे-धीरे बड़ते हुए उस असहनीय तापमान से स्त्री को उपर उठाने, उसे जागरुक बनाने और उसे एक पहचान देने की प्रक्रिया का नाम है।" 'जानकीनामा' कहानी की नायिका जुलेखा के जीवन में कैसे बदलाव आते हैं। जब वह गांव में रहती थी तब भेड मूर्गीयाँ पालती थी। वह प्रसार माध्यमों से वह दूर थी। परंतु जब वह बंबई जाती है तो उसके जीवन में कैसा बदलाव आता है। पहले वह टी. वी से डरती थी। अब वह रोज अलग अलग चैनल को देखती है। रोज वह अखबार को उलट पूलट सारे विचारों को जान लेती है।

नारी खूद के बलबुते पे खडा होने की क्षमता रखती है। उसे किसी के सामने हाथ फैलाने की आवश्यकता नहीं है। नारी कथाकार साहित्य के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाना चाहती है। इसमें सुधा आरोड़ा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उनकी कहानियों की नारी आर्थिक दृष्टि से परिपूर्ण होकर स्वंय के भविष्य निर्माण के लिए कटिबद्ध रहती है। सुनयना अपने पति के चपेट में आकर खुद को समाप्त कर देती है। सुनयना के जैसी अनेक युवतियों को दिशा देने का काम करती है - "पर सुन मेरी बच्ची अपनी कटी हूई हथेलियाँ न फैलाना उस बनाने वाले के सामने कि पिछली बार तुझे बनाते समय उसने जो भूल की थी उसे सुधार लो। नहीं, तुझे तो फिर वही बनना है फिर औरत सौ तेरे हिस्से का आसमान तेरे और सिर्फ तेरे नाम न कर दिया जाए।"[2]

दीप्ति के जीवन में आये बदलाव को देखने को मिलता है। उसका संघर्ष बेटी बहन बनकर देखा है। सुधा अरोड़ा की दमन चक्र कहानी की नारी के विविध आयामों को खोलती है। जिसने अपने जीवन संघर्ष में भी अपने अस्तित्व को बनाए रखा है वह इस प्रकार से -

"मेरे पास हैं रुपये, पर मैं दूँगी नहीं, तेरे उस क्लब को जिसमें सब तेरे जैसे निकम्में जाहिल अड्डेबाज लोग भरे पड़े है। या कि उन रइसों के बेटे जिनके पास बहुत सा काला पैसा है। तूने अपनी जिंदगी अपना उठना-बैठना सब इस क्लब के नाम लिख दिया है, अब क्या हमें भी.... ।"[3]

'महानगर की मैथिली' कहानी की चित्रा एक सशक्त नारी है। बंबई जैसे महानगर में रहकर अनेक समस्याओं का सामना करती और अपने कर्तव्य से पीछे नहीं रहती। मैथिली को बुखार आता है और वह रातभर जागती रहती है। चित्रा को ही घर में रखकर मैथिली की सेवा करने को चित्रा से कहती है। तो चित्रा गुस्से से कहती है -

"तुम नहीं जाओगे तो नुकसान तुम्हारा ही होगा न लेकिन मेरे न जाने से सवा सौ लड़कियाँ बैठी रह जाएँगी। इतनी गैर जिम्मेदार मै नहीं हो सकती।"[4]

सुधा जी की कहानियों में नारी हर क्षेत्र में समाज की परंपरा में बदलाव लाने का प्रयास कर रही है। उन्होंने अपनी कहानियों में नारी शोषण पर अधिक बल दिया। वह खुद एक स्त्री होने से नारी की समस्या समझने में भली भाँति परिचित है। उन्होंने अपने रचनाओं में काम काजी शिक्षित, महानागरीय नारीयों का अपनी रचनाओं में सविस्तर वर्णन किया है।

संदर्भ सूची :

1. एक औरत की नोट बुक - सुधा अरोड़ा, पृ. सं. 90
2. कल शुक्रवार - सुधा अरोड़ा, कहानी 'तीसरी बेटी के नाम' ये ठंडे सुखे बेजान शब्द, पृ. सं. 131
3. दस प्रतिनिधि कहानियाँ - सुधा अरोड़ा, कहानी दमनचक्र, पृ. सं. 55
4. दस प्रतिनिधि कहानियाँ - सुधा अरोड़ा, कहानी "महानगर की मैथिली", पृ. सं. 36